गोबर आधारित प्रसंस्करण से आर्थिक उत्थान

प्रीती वर्मा[1], सरोज चौधरी[1], धीरज कुमार[1], संदीप चौधरी[1] और **बबिता भिंदा[2]**

“ भारतीय ग्रामीण समाज में महिलाएं अक्सर घरेलू जिम्मेदारियों, सामाजिक बंधनों और सीमित आर्थिक संसाधनों के कारण अपनी प्रतिभा एवं क्षमता को पूर्ण रूप से अभिव्यक्त नहीं कर पातीं। फिर भी अनेक महिलाएं कठिन परिस्थितियों को ही अपनी शक्ति बनाकर आत्मनिर्भरता और सफलता की नई मिसाल कायम कर रही हैं। राजस्थान के टोंक जिले के ग्राम झिलाय की निवासी श्रीमती निर्मला देवी ऐसी ही प्रेरणादायक महिला हैं, जिन्होंने सीमित संसाधनों और अनेक चुनौतियों के बावजूद अपने दृढ़ संकल्प, निरंतर मेहनत और सीखने की लगन के बल पर न केवल अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की नई राह भी प्रशस्त की। आज वे अपने क्षेत्र में महिला सशक्तिकरण और गोबर आधारित उद्यमिता की एक सफल एवं प्रेरक पहचान बन चुकी हैं। ”

श्रीमती निर्मला देवी ग्राम झिलाय, जिला टोंक (राजस्थान) की निवासी एक साधारण ग्रामीण महिला थीं। इनके पति की आय नियमित नहीं थी, जिससे परिवार की आर्थिक स्थिति हमेशा चिंता का विषय बनी रहती थी। परिवार की आजीविका मुख्य रूप से खेती-बाड़ी और पशुपालन पर निर्भर थी, लेकिन सीमित आय के कारण दैनिक आवश्यकताओं और घरेलू खर्चों का प्रबंधन करना कठिन हो जाता था।

घरेलू कार्यों तथा खेत-खलिहान के दायित्वों में व्यस्त रहने के बावजूद श्रीमती निर्मला देवी हमेशा कुछ नया सीखने और अतिरिक्त आय का स्रोत विकसित करने के लिए प्रयासरत रहती थीं। इनमें आत्मनिर्भर बनने की प्रबल इच्छा थी और वे चाहती थीं कि अपने प्रयासों से परिवार की आर्थिक स्थिति को बेहतर बनाया जा सके। सीमित संसाधनों के बावजूद इनका सकारात्मक दृष्टिकोण, मेहनत और आगे बढ़ने का संकल्प ही उनके जीवन में परिवर्तन की नींव बना।

केवीके की प्रभावी भूमिका

इसी दौरान श्रीमती निर्मला देवी को जानकारी मिली कि कृषि विज्ञान केंद्र, टोंक द्वारा गौ-आधारित उत्पादों के निर्माण एवं उद्यमिता विकास पर एक विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। यह जानकारी उनके लिए एक नई उम्मीद लेकर आई, क्योंकि प्रशिक्षण का उद्देश्य स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का उपयोग कर कम लागत में अतिरिक्त आय के अवसर विकसित करना था।

प्रशिक्षण में इन्हें गोबर से धूपबत्ती, अगरबत्ती, उपले, जैविक खाद, दीपक तथा विभिन्न सजावटी एवं पूजन सामग्री बनाने की तकनीकों की जानकारी दी गई। साथ ही, उत्पाद निर्माण, गुणवत्ता, पैकेजिंग और विपणन से जुड़े व्यावहारिक पहलुओं से भी अवगत करवाया गया। इस प्रशिक्षण ने निर्मला देवी के भीतर आत्मविश्वास जगाया और उन्हें यह विश्वास दिलाया कि सीमित संसाधनों के बावजूद ग्रामीण महिलाएं भी सफल उद्यमी बन सकती हैं।

प्रशिक्षण से नई दिशा

प्रशिक्षण के दौरान श्रीमती निर्मला देवी को गोबर आधारित धूप और अगरबत्ती निर्माण की पूरी प्रक्रिया व्यावहारिक रूप से सिखाई गई। विशेषज्ञों ने उन्हें बताया कि अच्छे उत्पाद निर्माण के लिए गोबर की

प्रेरणा की मिसाल

समय के साथ श्रीमती निर्मला देवी का छोटा घरेलू प्रयास समय के साथ एक सफल ग्रामीण उद्यम के रूप में स्थापित हो गया, जो कार्य उन्होंने सीमित संसाधनों और छोटे स्तर पर शुरू किया था, वही आज इनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता का मजबूत आधार बन चुका है। पहले जहां वे परिवार की आय बढ़ाने के अवसर खोज रही थीं, वहीं आज वे स्वयं अन्य महिलाओं के लिए रोजगार और प्रेरणा का स्रोत बन गई हैं। वर्तमान में निर्मला देवी अपने गांव और आसपास के क्षेत्रों में महिला सशक्तिकरण, स्वरोजगार और पर्यावरण संरक्षण की जीवंत मिसाल के रूप में पहचानी जाती हैं। इन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि सफलता केवल बड़े संसाधनों पर निर्भर नहीं होती, बल्कि दृढ़ संकल्प, निरंतर मेहनत और सही मार्गदर्शन से भी प्राप्त की जा सकती है। गोबर जैसे सामान्य और उपेक्षित संसाधन को मूल्यवान उत्पादों में परिवर्तित कर 'गोबर से कमाई' की एक प्रेरणादायक मिसाल प्रस्तुत की है। इनका यह प्रयास केवल व्यक्तिगत सफलता की कहानी नहीं, बल्कि ग्रामीण महिलाओं के लिए आत्मनिर्भरता और उद्यमिता की दिशा में एक सशक्त संदेश भी है।

[1]कृषि विज्ञान केन्द्र, टोंक, वनस्थली विद्यापीठ, राजस्थान-304022; [2]राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) (राजस्थान)

सही तरीके से सफाई और छनाई करना अत्यंत आवश्यक है। इसके बाद विभिन्न सामग्रियों का संतुलित अनुपात में मिश्रण तैयार करना, उसमें प्राकृतिक सुगंध एवं जड़ी-बूटियों का समावेश करना तथा मशीन अथवा हाथ से धूप-अगरबत्ती की स्टिक्स बनाना सिखाया गया।

इन्हें उत्पादों को सही तरीके से सुखाने, उनकी गुणवत्ता बनाए रखने तथा आकर्षक पैकेजिंग और लेबलिंग के महत्व की भी जानकारी दी गई। साथ ही भंडारण की वैज्ञानिक विधियों एवं बाजार की मांग के अनुसार उत्पाद तैयार करने के बारे में भी विस्तार से समझाया गया। प्रशिक्षण में ग्राहकों की पसंद, स्थानीय बाजार की संभावनाओं और उत्पादों के विपणन से जुड़े पहलुओं पर भी विशेष ध्यान दिया गया।

यह प्रशिक्षण केवल तकनीकी जानकारी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि निर्मला जी के भीतर आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता की भावना को भी मजबूत करने का माध्यम बना। इस अनुभव ने उन्हें यह विश्वास दिलवाया कि सीमित संसाधनों के बावजूद वे स्वयं का छोटा उद्यम स्थापित कर आर्थिक रूप से परिवार को सहयोग देने के साथ-साथ अपनी एक अलग पहचान भी बना सकती हैं।

विस्तार

समय के साथ श्रीमती निर्मला देवी का व्यवसाय आगे बढ़ने लगा और उत्पादन क्षमता बढ़ाने, उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने तथा बाजार की बदलती मांग को समझने जैसी नई चुनौतियां भी सामने आने लगीं। इस दौरान केवीके, टोंक ने उन्हें निरंतर तकनीकी मार्गदर्शन और व्यावहारिक सहयोग प्रदान किया। विशेषज्ञों ने उन्हें आकर्षक पैकेजिंग और लेबलिंग, लागत एवं लाभ का सही विश्लेषण, उपभोक्ताओं की पसंद के अनुसार सुगंध और आकार में विविधता लाने तथा बाजार विस्तार और ब्रांड पहचान विकसित करने जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी दी।

श्रीमती निर्मला देवी ने इन सुझावों को गंभीरता से अपनाया और अपने उत्पादों में लगातार सुधार किया। इन्होंने विभिन्न सुगंधों और आकर्षक पैकेजिंग की नई श्रेणियां विकसित कीं, जिससे इनके उत्पाद अधिक ग्राहकों को आकर्षित करने लगे। बेहतर गुणवत्ता और सुंदर प्रस्तुति के कारण बाजार में इनके उत्पादों की पहचान मजबूत हुई तथा बिक्री में निरंतर वृद्धि होने लगी। धीरे-धीरे स्थानीय बाजार के साथ-साथ आसपास के क्षेत्रों में भी उनके उत्पादों की मांग बढ़ने लगी।

गोबर से सुगंधित अगरबत्ती बनाने की प्रक्रिया

आज श्रीमती निर्मला देवी अपने क्षेत्र में महिला उद्यमिता, आत्मनिर्भरता और ग्रामीण नवाचार की एक प्रेरक पहचान बन चुकी हैं। कृषि केवीके, टोंक द्वारा प्रदान किए गए प्रशिक्षण, तकनीकी मार्गदर्शन और निरंतर सहयोग ने इनके जीवन को नई दिशा दी। इन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि यदि स्थानीय कृषि एवं पशुपालन आधारित संसाधनों का वैज्ञानिक तकनीकों के साथ सही उपयोग किया जाए, तो सीमित साधनों में भी आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है।

श्रीमती निर्मला देवी की सफलता केवल व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण समाज में सकारात्मक परिवर्तन का भी सशक्त उदाहरण है। इन्होंने गोबर जैसे सामान्य और उपेक्षित संसाधन को आय और रोजगार के प्रभावी माध्यम में बदलकर यह दिखाया कि नवाचार और मेहनत के बल पर ग्रामीण महिलाएं भी सफल उद्यमी बन सकती हैं। आज वे न केवल अपने परिवार की आर्थिक मजबूती का आधार हैं, बल्कि अन्य महिलाओं को भी स्वरोजगार और आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित कर रही हैं। ■

घर से शुरुआत

प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद श्रीमती निर्मला देवी ने गोबर आधारित धूपबत्ती और अगरबत्ती निर्माण को स्वरोजगार के रूप में अपनाने का निर्णय लिया। कृषि विज्ञान केंद्र, टोंक तथा राजीविका के सहयोग से उन्होंने 'भैरुजी महाराज समूह' का गठन किया। प्रारंभिक चरण में समूह की अन्य महिलाओं ने भी इस कार्य में रुचि दिखाई, लेकिन समय के साथ अधिकांश महिलाएं इससे अलग हो गईं। इसके बावजूद निर्मला देवी ने इस कार्य को एक अवसर के रूप में देखा और पूरे समर्पण एवं धैर्य के साथ अपने प्रयास जारी रखें। इन्होंने बहुत कम पूंजी और घर पर उपलब्ध संसाधनों के सहारे लघु स्तर पर धूपबत्ती एवं अगरबत्ती निर्माण का कार्य शुरू किया। शुरुआत में इन्होंने अपने उत्पाद पड़ोसियों, परिचितों और स्थानीय दुकानदारों को नमूने के रूप में दिए तथा इनसे प्रतिक्रिया प्राप्त की। इनके बनाए उत्पादों की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे पूरी तरह प्राकृतिक, पर्यावरण-अनुकूल और रासायनिक उत्पादों से मुक्त थे। साथ ही ये स्वास्थ्य के लिए सुरक्षित, सुगंधित और किफायती भी थे। धीरे-धीरे लोगों का विश्वास उनके उत्पादों पर बढ़ने लगा। स्थानीय मंदिरों, पूजा सामग्री की दुकानों तथा आसपास के गांवों से उन्हें नियमित ऑर्डर मिलने लगे। बढ़ती मांग के साथ इनकी आय में भी निरंतर वृद्धि होने लगी। इससे न केवल परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार आया, बल्कि निर्मला देवी के आत्मविश्वास में भी बढ़ोतरी हुई। पहले जहां दैनिक खर्चों को पूरा करना कठिन होता था, वहीं अब वे आत्मनिर्भरता के साथ परिवार की आवश्यकताओं और बच्चों की जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होने लगीं।

सारणी: उद्यम की अनुमानित मासिक लागत एवं आय विवरण

सामग्री	मात्रा (कि.ग्रा.)	लागत मूल्य (रुपये)
गोबर	2000	20000
बाइन्डर	60	11400
गोंद	30	5400
सेन्ट	12	4800
स्टिक	96	19200
पैकिंग सामग्री	50	28000
श्रम	60 व्यक्ति	30000
परिवहन	सामान पहुंचाने हेतु	10000
बिजली बिल	मशीन चलाने हेतु	2000
मासिक उत्पादन	600	180000
शुद्ध लाभ (रुपये)	49200 प्रति महीना	